4.5.2020

स्नातक कला - भाग 1

विषय - हिन्दी रचना-व्याकरण

पाठ - कृदन्त के भेद

छात्र-छात्राओं !

जैसा कि पिछले वर्ग में उपसर्ग एवं प्रत्यय पर विचार किया गया था कि कृदन्त के दो भेद होते हैं — विकारी और अविकारी।

यहाँ यह भी ध्यान में रखना है कि विकारी वैसे शब्द को कहते हैं, जिनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि के कारण कहीं कुछ विकार उत्पन्न होता है। इसके विपरीत अविकारी वैसे शब्दों को कहा जाता है जिनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता है। ऐसे शब्द प्रत्येक स्थिति में अपने मूल रूप में ही बने रहते हैं। इन्हें ही अव्यय भी कहा जाता है। जैसे — जब, तब, अभी, इधर, उधर, यहाँ, कब, क्यों, वाह, आह, ठीक, अरे, और, तथा, एवं, किन्तु, परन्तु, बल्कि, इसलिए, अतः, अतएव, चूँकि, अर्थात इत्यादि।

विकारी कृदन्तों का प्रयोग संज्ञा या विशेषण के समान होता है और अविकारी कृदन्तों का प्रयोग क्रिया विशेषण या कभी-कभी संबंध सूचक के समान होता है। हिन्दी के कृदन्त प्रत्यय इस प्रकार हैं — अ, अंत, अक्कड़, आ, आई, आड़ी, आलू, आऊ, आँकू, आक, आका, आकू, आन, आनी, आप, आपा, आव, आवट, आवना, आवा, आस, आहट, इयल, ई, इया, ऊ, एरा, ऐत, ओड़ा, ओड़, औता, औती, औटी, औना, औनी, औड़ी, आवनी, औवल, क, का, की, गी, त, ता, ती, न्ती, न, ना, नी, वन, वाँ, वाला, वैया, सार, हार, हारा, हा इत्यादि।

तद्धित

संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में लगने वाले प्रत्यय को तद्धित कहा जाता है और उनके मेल से बने शब्द को 'तद्धितान्त'। जैसे: —

मानव + ता = मानवता
अपना + पन = अपनापन
अच्छा + आई = अच्छाई
एक + ता = एकता

इस प्रकार कृदन्त प्रत्यय क्रिया या धातु के अन्त में लगता है जबकि तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में लगता है।

एक बात और ध्यान में रखना है कि उपसर्ग और प्रत्यय के हिन्दी में जुड़ने के दो स्रोत और भी हैं। संस्कृत और उर्दू के स्रोत से भी आकर ये उपसर्ग-प्रत्यय हिन्दी शब्दों की रचना में सहायक होते हैं।
जैसे- संस्कृत उपसर्ग - अति से अतिरिक्त, अतिशय, अत्यन्त
अभि से - अभिभावक, अभिमान, अभिशाप इत्यादि
इसीतरह अधि, अनु, अप, अव उपसर्गों से भी हिन्दी के शब्द बनते हैं।
उर्दू-फारसी - उपसर्गों- जैसे, अल, कम, खुश, गैर, दर, ना इत्यादि उपसर्गों से भी क्रमशः अलबत्ता, कमउम्र, खुशबू, गैरहाजिर, दरकार, नापसन्द, हिन्दी के शब्द बने हैं।
इसीतरह संस्कृत के और उर्दू के प्रत्यय से भी बने शब्दों का प्रयोग हिन्दी में चलता है- जैसे - अ - शिव से शैव
अक - शिक्षा से - शिक्षक } संस्कृत
आ प्रत्यय सफेद मूलशब्द में जुड़ने पर सफेदा भाववाचक संज्ञा
ई - मूल प्रत्यय खुश के शब्द में " " खुशी " बनता है
अरबी-फारसी के उपर्युक्त उपसर्ग प्रत्यय के बहुतेरे प्रयोग हैं।

(मोहन शर्मा)
हिन्दी विभाग, एस एस.कॉ.
शाहजहाँपुर